बौद्ध धर्म और मानवीय मूल्य

*डॉ. (श्रीमती) नागरत्ना गनवीर

शोधपत्र-राजनीतिविज्ञान

बुद्धस्य वचनं निर्मलं करोति
बुद्धस्य ज्ञानं शांति ददाति ।
बुद्धस्य मार्ग सत्कर्मः अस्ति
बुद्धस्य छाया शीतलं करोति ।

बौद्ध धर्म सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया और करूणा आदि सात्विक गुणों पर आधारित है । बौद्ध धर्म कर्मवाद बुद्धिवाद और वैज्ञानिकतावाद पर आधारित है । बुद्ध की कथनी और करनी में विभेद न होने के कारण वे सर्व सुलभ हुए, और सर्वमान्य बने, शोधक–परिशोधक बने ।बौद्ध धर्म अहिंसा के अतिरिक्त सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनीतिक, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता के बुनियादी तत्वों को स्वीकार करता है । बौद्ध धर्म के सिद्धांत आधुनिक है जिसका मुख्य उद्देश्य मनुष्य को इसी धरती पर जीवन में विमुक्ति दिलाना है न कि मृत्युपरांत स्वर्ग दिखाना ।

अल्बर्ट आईन्स्टाईन के अनुसार –*''आधुनिक वैज्ञानिक समस्याओं का अगर कोई मुकाबला कर सकता है तो वह केवल बौद्ध धम्म है । दुनिया के किसी भी वैज्ञानिक के बुद्धि को स्वीकृत होने वाला कोई धर्म है तो वह बौद्ध धर्म है ।''*

श्रीलंका के **डॉ. अब्राहम कोवूर** के अनुसार –*''बौद्ध धम्म एक मात्र धम्म है जो बुद्धि प्रामाण्यवादी धम्म है''* ।[1]

फेडरिक नित्शे के अनुसार –*''बुद्धिझम बाकी सभी धर्मो से सौ प्रतिशत यथार्थवादी है''* । [2]

डॉ. आम्बेडकर के अनुसार– पूरी दुनिया में बुद्ध धम्म ही एकमात्र धम्म है जिसने शब्द प्रामाण्य, ग्रंथ–प्रमाण को नकारा और केवल बुद्धि प्रामाण्यता को स्थान दिया, काल्पनिक ईश्वर और आत्मा के अस्तित्व को नकारा और केवल मनुष्य के उन्नति, के बारे में सोचा इस प्रकार बुद्ध धम्म ही मनुष्य केन्द्रित है बाकी सभी धर्म ईश्वर केन्द्रित (God Centric) बन गये ।[3]

बुद्ध की विचार धारा का उद्देश्य समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं न्याय आधारित एक आदर्श समाज की रचना करना है । बुद्ध के विचार गतिशील है ऊर्जावान है। उनका विचार मानवीय चेतना के ठहराव को बिलकुल ही नहीं मानता वह मानवीय चेतना का धारा प्रवाहित उत्क्रांति का विज्ञान है जो जीवन को प्रतिपल नयापन देता है। आज विश्व के लगभग सभी धर्म यह मानने लगे हैं कि अब कलयुग आ गया है। अब कोई बुद्ध पुरूष पैदा नहीं हो सकेगा। कोई इस पृथ्वी को महाप्रलय से नहीं बचा पायेगा की भविष्यवाणी की गयी है। अर्थात् दुनिया के अन्य सभी धर्मों की शिक्षा दीक्षा एवं भविष्यवाणी के अनुसार अच्छे युगों की समाप्ति हो चुकी है। लेकिन इस समूचे दौर में महात्मा बुद्ध ही अकेले एक ऐसे प्रज्ञा पुरूष थे जिन्होंने ऐसे किसी भी अंतिम काल की घोषणा या भविष्यवाणी नहीं की बल्कि उन्होंने कहा कि प्रत्येक युग में ऐसे ही प्रज्ञा पुरूष पैदा होते रहेंगे और वे उनके धम्म को फिर से गतिमान करते रहेंगे।[4]

बुद्ध कल कितने आवश्यक थे इसका प्रमाण उनकी प्रसिद्धि है। उनका हर हृदय में सहज प्रवेश है किन्तु कल से ज्यादा बुद्ध आज आवश्यक है। इसलिए नहीं कि कलिंग सा युद्ध हर देश, महादेश लड़ रहा है बल्कि इसलिए कि हर परिवार एक युद्ध लड़ रहा है और हर व्यक्ति खंडहर बन गया है। [5] प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थ में लिप्त होकर भौतिक चीजों से मोह करके माता–पिता, समाज के प्रति अपने कर्तव्य तक भूल गया है। ऐसे में अपने अंदर के बुद्ध को जागृत, जीवित और कियाशील करना होगा तभी विश्व में शांति स्थापित होगी। बौद्ध धर्म ही भाई चारा, विश्व शांति, में प्रेरक का काम करेगा।

गौतम बुद्ध ने 40 वर्षों तक घूम–घूम कर उपदेश दिया। वे सारनाथ गए, वहाँ उनके अनेक शिष्य बने जिनमें प्रमुख सारी पुत्र, मौद गल्यायन, उपाली सेठ, आनथपिंडक, राजा बिम्बसार और अजातशत्रु आदि। उन्होंने अपने उपदेश सारनाथ, काशी, मगध, गया, नालन्दा, पाटिलपुत्र, कपिलवस्तु, वैशाली, मथुरा और कुशी नगर में दिये। बुद्ध के उपदेश त्रिपिटकों में (तीन पिटक में) संग्रहित है ये त्रिपिटक है–(1) सुत्तपिटक (2) विनय पिटक (3) अभिधम्म पिटक.

(1) **सुत्त पिटक**–सुत्त का अर्थ धर्मोपदेश होता है। इसमें बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का सरल तथा सहज शैली में प्रतिपादन है। इस पिटक में 6 निकाय हैं–दीर्घ निकाय, मुज्झिम निकाय, संयुक्त निकाय, अंगुतर निकाय और खुद्दक निकाय। इसमें दीर्घ निकाय सबसे अधिक प्रमुख समझा जाता है। [6]

(2) **विनय पिटक**–में बौद्ध धर्म तथा संघ के नियमों का वर्णन है। इसके तीन भाग हैं–सुत्त वेभंग, खन्धक और परिवार

* सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान, शा.वि.या.ता. महाविद्यालय, दुर्ग

पाठ ।[7]

(3) **अभिधम्म पिटक** – इसका अर्थ है उच्चतर धर्म या विशेष धर्म । इस पिटक में बुद्ध के मन्तव्यों का वर्गीकरण और विश्लेषण है । यह साहित्य उच्च साधकों के लिए है, जो बौद्ध धर्म का गम्भीर अध्ययन करना चाहते हैं ।[8]इन त्रिपिटकों की रचना के बाद जो साहित्य लिखा गया वह उनके व्यक्तों की व्याख्या ही था । इसको अनुपिटक साहित्य कहा जाता है । इसको दो वर्गों में बांटा गया – अट्ठकहा और जातक । दीर्घ निकाय में चारों वर्णो के वर्गीकरण के विषय में उल्लेख है । इसमें वर्णो का विभाजन समाज की आवश्यकता और व्यक्तियों की योग्यता एवं कर्म के आधार पर ही किया गया है ।

सुत्त पिटक में कहा गया है – ''कोई ब्राह्मण जन्म से ब्राह्मण नहीं होता, कोई जाति–च्युत (अछूत या शूद्र) जन्म से शूद्र नहीं होता, शूद्र अपने कर्मों से शूद्र होता है, ब्राह्मण हो सकता है ।''

धम्मपद में कहा गया है – ''न जन्म के कारण न गोत्र के कारण न जटा धारण के कारण ही कोई ब्राह्मण बनता है । जिसमें सत्य है, जिसमें धर्म है, वही पवित्र है और वही ब्राह्मण है ।''

महात्मा बुद्ध ने कहा – ''जो भी मनुष्य चाहे वह ब्राह्मण हो, वैश्य हो या शूद्र हो, सम्यक कर्म करेगा, वह मोक्ष का अधिकारी होगा ।'' बुद्ध ने बिना किसी भेदभाव के बौद्ध धर्म और संघ की शरण में जाने की प्रेरणा दी थी ।

गौतम बुद्ध मानवीय समानता के प्रथम उद्घोषक है । लगभग 2500 साल बाद डा. आम्बेडकर बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर लाखों लोगों का धर्म परिवर्तित कर बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार किया । डा. अम्बेडकर कहते हैं – बुद्ध ने बिना अधिनायकवाद के साम्यवाद की स्थापना की है । आगे वे कहते हैं – बुद्धवाद, मार्क्सवाद का नैतिक और सहिस्णु विकल्प है ।[9]

बुद्ध के अंतिम वाक्य थे – सभी यौगिक वस्तुएँ नाशवान होती है, अपने परिश्रम से अपने निर्वाण का मार्ग प्रशस्त करो।

भगवान बुद्ध का बौद्ध धर्म कर्मवाद पर आधारित है । उनका कहना है व्यक्ति अपने कर्मों से ही अच्छा या बुरा जन्म पाता है । कर्म से शरीर निर्मित होता है, मरने पर कर्म ही रह जाते हैं । अतः जीवन के अंतिम क्षण तक सद्धर्म का पालन करना चाहिए। बुद्ध ने पहली बात बताई की उनके सद्धर्म को आत्मा–परमात्मा से कुछ लेना देना नहीं है । उनके सद्धर्म को कर्मकाण्ड के क्रिया कलापों से भी कुछ लेना देना नहीं है । बुद्ध के धर्म का केन्द्र बिन्दु मनुष्य है । मनुष्य को सदैव अच्छे कर्म करना चाहिए । उसे माया, मोह, क्लेश, क्रोध, भय से मुक्त होकर स्वतंत्र मध्यमवर्गीय जीवन जीना चाहिए ।

बुद्ध ने चार आर्य सत्य बताये ।[10]

(1) दुःख (2) दुःख समुदाय (3) दुःख निरोध (4) दुःखों से मुक्त रहने का मार्ग

बुद्ध का कहना था सारा संसार दुःख की कगार में फंसा है । दुःख का मूल कारण तृष्णा है । तृष्णा राग, द्वेष, ईर्ष्या व कभी न मिटने वाली भूख पैदा करती है । व्यक्ति सुख प्राप्त करने के लिए इधर–उधर भटकता है । शक्ति और ऐश्वर्य के लिए सब कुछ दॉव पर लगा देता है । अतः अच्छे जीवन के लिए तृष्णा का उन्मूलन आवश्यक है । बुद्ध ने तृष्णा और दुःखों से मुक्ति पाने के लिए अष्टांगिक मार्ग (नियम) बतायें[11] –

(1) सम्यक (सत्य) दृष्टि (2) सम्यक वाक् (3) सम्यक संकल्प (4) सम्यक कर्मान्त (5) सम्यक आजीव (6) सम्यक व्यायाम (7) सम्यक स्मृति (8) सम्यक समाधि

इन आठ मार्गों पर चल कर प्रत्येक मनुष्य अपना और जगत का कल्याण कर सकता है । निर्वाण प्राप्ति के लिए बुद्ध ने सदाचार और नैतिकता पर बल दिया । उन्होंने जीवन की अच्छाई के पॉच मापदण्ड बताये – (1) हिंसा न करना (2) चोरी न करना (3) व्यभिचार न करना (4) असत्य न बोलना (5) नशीली चीजों को ग्रहण न करना । यह पंचशील जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है । क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन का मापदण्ड होना चाहिये । जिससे व्यक्ति अपने अच्छे बुरे कार्यो की जांच कर सके । जिस व्यक्ति के जीवन का कोई मापदण्ड नहीं हेता वह पतित होते हुए भी यह नहीं जानता कि वह पतित है । इसलिये वह हमेशा पतित रहता है। अतः मनुष्य को निरंतर अच्छे कर्म करना चाहिए । भगवान बुद्ध का कहना था जो चीजें अस्तित्व में आती हैं वे सब सहेतुक होती हैं । न वे ईश्वर द्वारा निर्मित होती है, न बह्मा द्वारा, न आत्मा द्वारा, न बिना हेतु (कारण) के अस्तित्व में आती हैं । हमारे कर्म ही हैं जो अच्छे बुरे परिणामों को जन्म देते हैं । इसलिये हम मिथ्या धारणाओं का त्याग करें, हम व्यर्थ की सूक्ष्म काल्पनिक उड़ानों में न उलझे रहे, हम आत्मा और आत्मार्थ से युक्त अच्छे कर्म करें ताकि उनका परिणाम भी कुशल हो ।[12]

यद्यपि भगवान बुद्ध के धर्म पर अनेक आलोचनाएँ की गई जैसे– –सभी के लिये संघ का सदस्य बन सकने की आलोचना –व्रत ग्रहण करने की आलोचना –अहिंसाके सिद्धांत की आलोचना–अनित्यता को अंधकार का कारण बताना –बौद्ध धर्म निराशावादी है –आत्मा तथा पुनर्जन्म संबंधी आलोचना –ऊछेदवासी होने का दोषारोपण

इस प्रकार नासमझ या भ्रमित लोगों ने बुद्ध पर अनेक आरोप लगाये किन्तु भगवान बुद्ध ने उन सभी बातों की व्याख्या कर (जिनमें लोगों को संदेह था) सत्य से परिचय कराया। यही कारण है कि बौद्ध धर्म केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों–चीन, जापान, थाईलैण्ड, बर्मा, श्रीलंका में तेजी से फैला और करोड़ो लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी बने । भारत के सामान्य जन समुदाय से लेकर अनेक कुलीनों तथा धार्मिकों को बुद्ध ने धर्म दीक्षा दी । कुछ प्रमुख कुलीनों की धर्म दीक्षा – यश कुल पुत्र की धर्म दीक्षा – काश्यप–बन्धुओं की धर्म दीक्षा – सारी पुत्र तथा मौदगल्यायन की दीक्षा – राजा बिम्बसार की धर्म दीक्षा – जीवक की धर्म दीक्षा– रट्ठपाल की धर्म दीक्षा – अनाथ पिण्डिक, राजा प्रसेनजित और रट्ठपाल की धर्म शिक्षा

इसके अतिरिक्त कई ब्राह्मणों और निम्न स्तर के लोगों को धर्म दीक्षा देकर भगवान बुद्ध ने सत्य मार्ग दिखाया और उनके जीवन उज्जवल कर दिया। भगवान बुद्ध का धर्म समानता, स्वतंत्रता और सत्य पर आधारित है। रूढ़िवाद ढोंग, ढकोसलों से दूर साफ, स्वच्छ, मैत्री, करूणा युक्त, धर्म है। भारत में कई विश्व विद्यालयों में बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जाती है, उदा. है जहॉ छोटे–छोटे हजारों की संख्या में बच्चे गेरूआ वस्त्र धारण किए चित को शांत रख कर अनुशासन में बौद्ध धर्म की पढ़ाई कर रहे हैं। आज भारत ही नहीं बल्कि विश्व में आतंकवाद का खतरा जिस तेजी से बढ़ रहा है यह महाविनाश के लक्षण हैं। देश का कोई कोना सुरक्षित नहीं है। ऐसे में बुद्ध की सत्य, अहिंसा की शिक्षा अमृत साबित होगी। आज परिवारों का विखण्डन हो रहा है। पश्चिमी संस्कृति भारत में घुसपैट कर चुकी है। हमारी सभ्यता और संस्कृति को बचाने के लिए शील और संयम की आवश्यकता है। ऐसे में बुद्ध की धर्म दीक्षा भारत ही नहीं पूरे विश्व के लिए आवश्यक है। यह दीक्षा माननीय मूल्य पर आधारित है कर्म पर आधारित है सबके हित पर आधारित है। भगवान बुद्ध ने राजा के कर्तव्य बताया कि वह बेकारी और बेरोजगारी का अंत करते हुए अपने प्रजाजन को उसके अपने पैरों पर खड़ाकर दें। धम्मपद में जीवन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए धन को महत्वपूर्ण माना गया है तथा बताया गया है कि–जिन्होंने यौवन में धन प्राप्त नहीं किया, वे लोग मछलियों से शून्य जलाशय में वृद्ध कोंच पक्षी के समान चिन्तामग्न होते हैं।

धम्मपद में यह वर्णन है कि धन मेरा, पुत्र मेरा है, ऐसा विचार कर मुर्ख मनुष्य दुःख पाता है। जब आत्मा ही अपनी नहीं तो पुत्र कहॉं का और धन कहॉं का। संसार में धन सम्पत्ति असली धन नहीं है बल्कि संतोष श्रेष्ठ धन है, विश्वास को परम शांति और निर्वाण को परम सुख कहा गया है। गौतम बुद्ध की देन –

– समाज की मानवीय समानता पर बल
– विचार स्वतंत्रता पर बल
– भारत में राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास
– लोकतांत्रिक सिद्धांतों को प्रोत्साहन
– राज्यों के आपसी संबंधों में शांति व मैत्री के सिद्धांत का विकास
– अहिंसा के सिद्धांत का प्रतिपादन
– श्रेष्ठ नैतिक जीवन का आदर्श
– शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र में देन
– प्रशासनिक क्षेत्र में देन
– विदेशों में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रसार

बुद्धस्य अन्वेशणं शाश्वतम्
सर्वानि कार्याणि सिद्धं करोति।

ऐसे महा मानव, परम् पूज्य, तथागत, भगवान बुद्ध को आओ हम सब मिलकर प्रणाम करें

और कहें –

बुद्धं शरणं गच्छामि ।
धम्मं शरणं गच्छामि ।
संघं शरणं गच्छामि ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.बहुजन व्हिजन/ हिन्दी/ नियतकालिक अक्टूबर, नवम्बर 2009, 2. वहीं. 3. वहीं. 4. बहुजन व्हिजन/दि. 9 अक्टूबर–16 अक्टूबर 2008/ पृ. 7 5. प्रो. श्रीकांत प्रसून/ भगवान बुद्ध जीवन व वाणी /पृ. 11 6. पुखराज जैन / राजनीति विज्ञान/ साहित्य भवन पब्लिकेशन 2001/पृ. 83 7. बहुजन व्हिजन /दि. 9 अक्टूबर–16 2008/ पृ. 7 8. वहीं 9. पुखराज जैन/राजनीति विज्ञान/साहित्य भवन पलिब्लकेश 2001/पृ. 89 10. अवधेश सिंह/बौद्ध धर्म का एक अध्ययन/ पृ. 74 11. डॉ. भीमराव अम्बेडकर/भगवान बुद्ध और उनका धर्म/ पृ 97 12. वहीं पृ. 117